AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के भूमि उपयोग प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारकः एक भौगोलिक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author

दीनानाथ ठाकुर,

शोधार्थी, (यूजीसी नेट), स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

डॉ० प्रदीप कुमार सिंह,

विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
मार्खम कॉलेज ऑफ कार्मस
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के भूमि उपयोग प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य वर्तमान भूमि उपयोग प्रारूप का अध्ययन करना तथा भूमि उपयोग प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारकों को जानना है। इस अध्ययन को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है, साथ ही वर्णानात्मक एवं विश्लेषणात्मक रूप में अध्ययन किया गया है। इस शोध में भूमि उपयोग कारको के अंतर्गत भौतिक कारक (उच्चावच, जलवायु, अपवाह, प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी जल की उपलब्धता) एवं मानवीय कारक (जनसंख्या दबाव, प्रवास, शहरीकरण, शहरी फैलाव, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, आवासीय सुविधा, परिवहन सुविधा) का विशेष योगदान है। इसी से वर्तमान भूमि उपयोग प्रारूप परिवर्तन हो रहा है। इसमें वर्ष 2000–2001 से 2011–2012 के दौरान काफी परिवर्तन देखा गया है जिसमें सबसे ज्यादा वन भूमि +8.18 प्रतिशत का परिवर्तन एवं सबसे कम नकारात्मक दृष्टि वर्तमान परती एवं अन्य परती भूमि –7.74 प्रतिशत परिवर्तन देखने को मिला।

मुख्य बिंदु

उच्चावच, मिट्टी, जल की उपलब्धता, आवासीय संरचना, शहरीकरण, वन भूमि, शुद्ध बोया क्षेत्र, गैर–कृषि योग्य भूमि.

प्रस्तावना

भूमि उपयोग मानव द्वारा प्रयोग किए जाने वाले भूमि की दशा को इंगित करता है। भूमि उपयोग वांछनीय सामाजिक एवं पर्यावरणीय पक्षो को ध्यान में रखते हुए संसाधनों के अधिक कुशल उपयोग को बढ़ावा देने की प्रक्रिया है। (डॉ एस० पी० सिंह)

सामान्यतः भूमि मानव के कार्यों को इंगित करता है, जो भूमि संसाधनों का प्रयोग करके उससे लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से करता है। भूमि उपयोग वह कार्य है, जो यह दर्शाता है कि किस–किस कार्यों के लिए भूमि का उपयोग किया जा रहा है। भूमि उपयोग क्षेत्र विशेष के आधार पर अलग–अलग होता है, जैसेः ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि उपयोग विशेषकर वानिकी और खेती के लिए जबकि शहरी क्षेत्रों में (कस्बा और शहर) भूमि उपयोग आवास और उद्योग हो सकता है।

फॉक्स के अनुसार ''भूमि उपयोग, भूमि प्रयोग की शोषण की प्रक्रिया है, जिसमें भूमि का व्यवहारिक उपयोग किसी निश्चित उद्देश्यों से किया जाता है''। (आर० सी० तिवारी,, पृष्ठ–78)

वुड के मतानुसार ''भूमि उपयोग के प्राकृतिक भू–दृश्य के संदर्भ में ही नहीं अपितु मानवीय क्रियाओं पर आधारित उपयोग में सुधार प्रयुक्त होने चाहिए।'' (आर० सी० तिवारी,, पृष्ठ–78)

भूमि उपयोग के प्रमुख प्रकारो को आमतौर पर गुणात्मक प्रकृति के भूमि मूल्यांकन का अध्ययन माना जाता है। ''भूमि उपयोग'' कई पैमानों पर आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और भूमि कार्यकाल कारक से प्रभावित होती है दूसरी ओर, भूमि आच्छादन भूमि के कई जैविक, भौतिक विशेषताओं में से एक है, जो पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। (टर्नर, एट, अल 1995)

भूमि संसाधन भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों के सहयोग का प्रतिफल है। भूमि मानव के जीवन का आधार है क्योंकि प्राकृतिक वनस्पति, वन्यजीव, मानव जीवन, आर्थिक क्रियाएँ, परिवहन तंत्र तथा संचार व्यवस्था भूमि पर आधारित है। पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि एवं उच्च जीवन स्तर के सुविधाओं के विस्तार के लिए भूमि का अधिकतम उपयोग होने लगा है। कृषि भूमि उपयोग के अधिकतम मात्रा में परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है।

साहित्य समीक्षा

अनेक भूगोलवेत्ताओं ने भूमि उपयोग से संबंधित अनेक शोध प्रस्तुत किए हैं:

प्रोफेसर डडले स्टाम्प ने सर्वप्रथम 1932 ई० "यूज एंड मिस्यूज ऑफ लैंड इन ब्रिटेन" में भूमि उपयोग को स्पष्ट किया। भारत में इनके अंतर्गत सर्वप्रथम बी० एस० राय (1942–46) एवं चटर्जी (1952 ई०) ने किया। चटर्जी महोदय ने 1952 ई० में पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले के भूमि उपयोग पर सर्वेक्षण कार्य किया। मोहम्मद सफी (1960 ई०) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में भूमि उपयोग का गहन अध्ययन किया। सौरी राजन 1931 ई० में मालाबार जिले के कृषि उत्पादन पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

ए. एन. गुप्ता (1966 ई.) ने "लैंड यूटिलाईजेशन इन उदयपुर डिस्ट्रिक्ट्" पर शोध कार्य किया। माजिद हुसैन (1969 ई०) द्वारा "लैंड यूटिलाईजेशन इन सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट" नामक शोध पत्र में भूमि उपयोग पर विस्तृत चर्चा किया। ए. के. तिवारी, बी. एन. शर्मा और आर० के० पाण्डेय (2015 ई.) ने अपने शोध पत्रिका "पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि भूमि उपयोग के प्रारूप" के माध्यम से कृषि कों उत्तर प्रदेश के आर्थिक शक्ति का आधार माना है इसमें कहा गया है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि से जुड़ी कार्यों में संलग्न है। गोमती (2012 ई०) ने कृषि भूमि उपयोग के संदर्भ में शोध कार्य किया जो बुंदेलशहर जिला के ऊपरी–गंगा–यमुना दोआब पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र हजारीबाग जिला के अंतर्गत हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड है। इनका अक्षांशीय विस्तार $23^0$57′49′′–$24^0$1′46′′ उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार $85^0$20′00′′– $85^0$27′26′′ पूर्वी भाग तक विस्तृत है। इसका कुल क्षेत्रफल 312.43 वर्ग किलोमीटर है। यहां की शहरी जनसंख्या 1991 में 202345 , 2001 में 270664 एवं 2011 में 290098 देखी गई है। यहां दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 1991–2001 में कुल 33.8 प्रतिशत (ग्रामीण 29.1, शहरी 68.2 प्रतिशत) एवं 2001–2011 में 7.18 प्रतिशत (ग्रामीण–6.61ए शहरी –19.30 प्रतिशत) पाया गया। अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत शहरी जनसंख्या वृद्धि दर 1991 (51.5 प्रतिशत), 2001 (53.2 प्रतिशत), 2011 (59.2 प्रतिशत) रही।

अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत 25 ग्राम पंचायत एवं 94 गांव और 3 जनगणना शहर (मेरु, मरईकला, ओकनी 2) शामिल है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तर में इचाक प्रखंड, दक्षिण में बड़कागांव, पूर्व में दारू एवं पश्चिम में कटकमदाग और कटकमसांडी शामिल है। इस प्रखंड की साक्षरता दर 77.56 प्रतिशत (पुरुष–85.90 प्रतिशत, महिला– 68.12 प्रतिशत) है। इस प्रखंड में हजारीबाग जिले की कुल जनसंख्या का 80.56 प्रतिशत हिंदू, 16.21 प्रतिशत मुस्लिम,

0.99 प्रतिशत ईसाई है। यहां किसान 9.02 प्रतिशत, खेतीहर मजदूरी 7.43 प्रतिशत, घरेलू उद्योग 2.38 प्रतिशत एवं श्रमिक 81.17 प्रतिशत हैं।

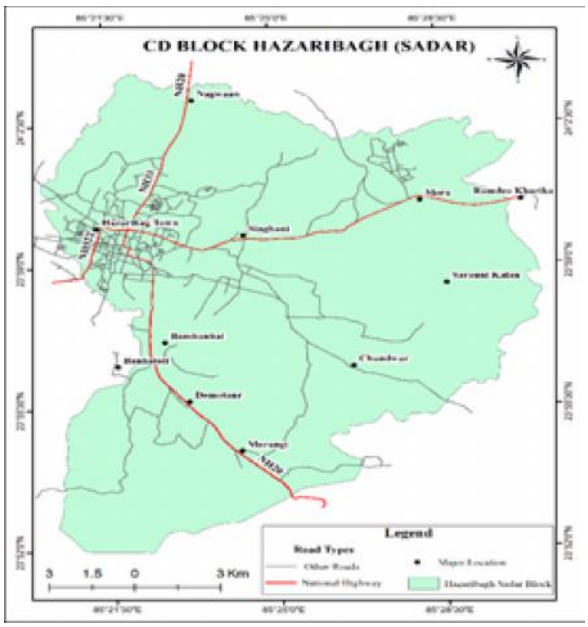

(स्रोतः झारखंड प्रशासनिक एटलस)

उद्देश्य

शोध पत्र की समस्या से संबंधित निम्न उद्देश्य हैः

- अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग प्रारूप के वर्तमान स्वरूप जानना।
- अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारकों को जानना।

विधि तंत्र

1. **प्राथमिक आँकड़ा विधिः** अवलोकन एवं साक्षात्कार।
2. **द्वितीयक आँकड़ा विधिः** प्रखंड कार्यालय, वेबसाइट एवं हजारीबाग नगरपालिका, नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखंड सरकार।
3. **विश्लेषणात्मकः** सह–वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

विवेचना

भूमि उपयोग, मानव द्वारा भूमि के उपयोग प्रारूप की वैसी प्रक्रिया है जिसमें भूमि की गुणधर्मो एवं स्वरूपों में परिवर्तन देखने को मिलता है। मानव सभ्यता के उदय के पहले से ही भूमि का सर्वोत्तम प्रयोग किया है। यह पेलियोलेथिक, नियोलेथिक से शहरी क्रांति तक भूमि के स्वरूप में परिवर्तन किया गया है एवं निरंतर यह जारी होने की संभावना है। यदि व्यवहारिक दृष्टि से देखें तो अध्ययन क्षेत्र में भी यह परिवर्तन काफी मात्रा में देखने को मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग प्रारूप के वर्तमान स्वरूप

अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान भूमि उपयोग प्रारूप निम्न तालिका से स्पष्ट हैः

हजारीबाग सी. डी. प्रखंड की भूमि उपयोग प्रारूप (2000–2001)

भूमि उपयोग के प्रकार	क्षेत्रफल		हजारीबाग सी. डी.	हजारीबाग मे
	हेक्टेयर	वर्ग किमी०	प्रखंड मे क्षे.(प्रतिशत में)	क्षे.(प्रतिशत में)
वन भूमि	7731.99	77.31	31.74	43.94
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	5280.81	52.80	21.68	16.20
अकृष्य बंजर भूमि	5346.15	33.46	13.74	8.96
गैर–कृषि योग्य भूमि	1768.47	17.68	7.24	7.90
बाग के अंतर्गत भूमि	181.95	1.81	0.74	1.01
स्थायी चरागाह एवं चराई	116.33	1.16	0.47	0.65
कृषि योग्य बंजर भूमि	404.50	40.45	1.67	1.34
वर्तमान एवं अन्य परती भूमि	5527.3	55.27	22.69	20.00
कुल	24357.5	243.57	100	100

(स्रोतः प्रखंड कृषि विभाग, हजारीबाग)

उपरोक्त तालिकाओं से यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2000–2001 के दौरान अध्ययन क्षेत्र में वन भूमि का विस्तार 31.74 प्रतिशत था, जो सर्वाधिक क्षेत्र में भूमि उपयोग को दर्शाता है। जबकि सबसे कम 0.47 प्रतिशत, स्थायी चरागाह एवं चराई भूमि है। यदि हजारीबाग जिले के साथ तुलनात्मक प्रतिशत देखे तो जिले में वन भूमि अपने कुल क्षेत्रफल का 43.94 प्रतिशत था, जो कि प्रखंड से 12.20 प्रतिशत अधिक था जबकि स्थायी चरागाह एवं चराई भूमि का प्रतिशत 0.65 रहा जो प्रखंड से 0.18 प्रतिशत अधिक था। इसी प्रकार का अध्ययन क्षेत्र मे शुद्ध बोया गया क्षेत्र 21.68 प्रतिशत, अकृष्य बंजर भूमि 13.74 प्रतिशत, गैर–कृषि योग्य भूमि 7.27 प्रतिशत, बाग (उद्यान) के अंतर्गत भूमि 0.74 प्रतिशत, कृषि योग्य बंजर भूमि 1.67 प्रतिशत, स्थाई चारागाह एवं अन्य चराई भूमि 0.47 प्रतिशत, वर्तमान परती एवं अन्य परती भूमि 22.69 प्रतिशत है।

हजारीबाग सी. डी. प्रखंड की भूमि उपयोग प्रारूप (2011–2012)

भूमि उपयोग के प्रकार	क्षेत्रफल		हजारीबाग सी. डी.	हजारीबाग मे
	हेक्टेयर	वर्ग किमी०	प्रखंड मे क्षे.(प्रतिशत में)	क्षे.(प्रतिशत में)
वन भूमि	7731.99	77.31	31.74	
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	5280.81	52.80	21.68	
वन भूमि	8978	89.78	39.92	
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	5247.3	52.74	23.45	
अकृष्य बंजर भूमि	2111.8	21.11	9.38	
गैर–कृषि योग्य भूमि	196	1.96	0.88	
बाग के अंतर्गत भूमि	456.6	4.56	2.02	
स्थायी चरागाह एवं चराई	274.1	2.74	1.22	
कृषि योग्य बंजर भूमि	1165	11.65	5.18	
वर्तमान एवं अन्य परती भूमि	4035.9	40.35	17.95	
कुल	22491.7	224.91	100	

(स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका, 2011)

उपरोक्त तालिका में वर्ष 2011–2012 के दौरान अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग प्रारूप को दर्शाया गया है जिसमें वन भूमि सुधार (39.92 प्रतिशत), शुद्ध बोया गया क्षेत्र (23.45 प्रतिशत), गैर–कृषि योग्य भूमि (9.38 प्रतिशत), बाग के अंतर्गत भूमि (0.88 प्रतिशत), अकृषित बंजर भूमि (2.02 प्रतिशत), स्थायी चारागाह एवं अन्य चारागाह भूमि

(1.22 प्रतिशत), कृषि योग्य बंजर भूमि (5.18 प्रतिशत), वर्तमान परती एवं अन्य परती भूमि (17.95 प्रतिशत) है। वर्ष 2000–2001 से 2011–12 के दौरान भूमि उपयोग में आए अंतर निम्न तालिका से दिखाई जा सकती हैं:

2000–01 से 2011–012 के दौरान हजारीबाग सी. डी. प्रखंड की भूमि उपयोग प्रारूप में अंतर (प्रतिशत में)

भूमि उपयोग के प्रकार	2000–01	2011–12	अंतर
वन भूमि	31.74	39.92	+8.18
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	21.68	23.45	+1.77
गैर–कृषि योग्य भूमि	7.27	9.38	+2.11
बाग(उद्यान) के अतंगर्त भूमि	0.74	0.88	+0.14
अकृष्य बंजर भूमि	13.74	2.02	–11.72
स्थायी चारागाह एवं अन्य चारागाह	0.47	2.74	+2.27
कृषि योग्य बंजर भूमि	1.67	11.65	+9.98
वर्तमान परती एवं अन्य परती भूमि	22.69	17.95	–7.74

(स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका, 2001–2011)

वर्ष 2000–2001 से 2011–2012 के दौरान भूमि उपयोग प्रारूप में काफी बदलाव देखा गया है अर्थात् इन 10 सालों के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र में वन भूमि के अंतर्गत +8.18 प्रतिशत, शुद्ध बोया गया क्षेत्र +1.77 प्रतिशत, गैर कृषि योग्य भूमि +2.11 प्रतिशत, बाग अंतर्गत भूमि +0.14 प्रतिशत, अकृष्य बंजर भूमि –11.72 प्रतिशत, स्थायी चारागाह एवं अन्य चारागाह +2.27 प्रतिशत, कृषि योग्य बंजर भूमि +9.98 प्रतिशत एवं वर्तमान परती एवं अन्य परती भूमि –7.74 प्रतिशत का अंतर देखा गया है।

नगर निगम की वर्तमान (2015–2016) भूमि उपयोग प्रारूप

संख्या	भूमि उपयोग	क्षेत्रफल		नियोजन क्षेत्र	किस क्षेत्र
		वर्ग किमी.	हेक्टेयर	का प्रतिशत	का प्रतिशत
क.	**विकसित क्षेत्र**				
1.	आवासीय	22.96	2296	24.1	68.5
2.	वाणिज्यिक	0.49	49	0.5	1.5
3.	उद्योग	0.47	47	0.5	1.4
4.	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	6.14	614	6.5	18.3
5.	परिवहन एवं संचार	2.82	282	3.0	8.4
6.	मनोरंजक खुली जगह	0.61	61	0.6	1.8
	उप–कुल क	33.50	3350	35.2	100
ख.	**अविकसित क्षेत्र**				
7.	प्राथमिक गतिविधि	55.12	5512	57.9	–
8.	जल क्षेत्र खुली जगह	3.17	317	3.3	–
9.	विशेष क्षेत्र	3.39	339	3.6	–
	उप–कुल ख	61.68	6168	64.8	–
	क + ख	95.17	9517	100.0	–

(स्रोतः नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखंड सरकार)

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक

अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग प्रारूप के संपूर्ण विवरण से स्पष्ट होता है कि यहाँ के स्वरूप को अनेक कारक प्रभावित कर रहे है। भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों में उन सभी कारकों को शामिल करते हैं जो निम्न हैः

- प्राकृतिक कारक।
- मानवीय कारक।

प्राकृतिक कारक

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक या भौतिक कार्य के अंतर्गत निम्न को शामिल किया गया हैः

उच्चावच

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड हजारीबाग पठार के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। यह सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र छोटानागपुर पठार के दोन और टॉड़ की स्वरूप में विस्तृत है। यह अध्ययन क्षेत्र पहाड़, नदी–घाटी, मैदानी भूमि के तौर पर फैले हैं। यह क्षेत्र के आर्कियन क्रम के आतंरिक भाग का हिस्सा है और यह अपरदन एवं जमाव की प्रक्रिया से गुजरा है। साथ ही वर्तमान में कुछ मैदान इलाको में मोनाडॅनोक और समप्राय मैदान भी दृष्टिगत होती है। यहाँ दो पहाड़ी कनहरी और सिलवार समुद्र तल से क्रमशः 710 मीटर और 662 मीटर है। यह क्वार्टजाइट–बायोटाइट और हार्नब्लैंड उत्पत्ति से निर्मित है। यहाँ अवनालिका अपरदन परत भी पाये जाते है, क्वार्ट्ज और पेगमाटाइट भी उपस्थित हैं।

इस अध्ययन क्षेत्र की मूल विशेषता यहाँ कि विभिन्न आकार एवं आकृतियों से सजे छोटी–छोटी से भू–दृश्य जो काफी मोड़दार एवं घुमावदार है। यह विशेष रूप से क्षैतिज रूप में समरता लिए हुए हैं। हजारीबाग शहर के आसपास कनहरी, सिलवार, सीतागढ़ा पहाड़ियां है ।

जलवायु

वास्तव में जलवायु दीर्घ अवधि में विस्तृत क्षेत्र पर प्रभावी औसत मौसमी दशा को जलवायु कहा जाता है। (झारखंड प्रदेश की भौगोलिक व्याख्या डॉ० सरोज कुमार सिंह, पृ०सं० 32)

हजारीबाग सी.डी. प्रखंड(सदर) में मानसूनी प्रकार आर्द्र उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु पाई जाती है। यहाँ 0 डिग्री से –3 डिग्री सेल्सियस के ऊपर सबसे ठंडे महीने तथा कम से कम औसत मासिक तापमान 22 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तथा कम से कम 4 माह का औसत तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से ऊपर होना चाहिए। इस अध्ययन क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता ऋतु का आचरण है। भूमि उपयोग के मूल स्वरूप यहाँ की अनुकूल जलवायु परिस्थितियों पर निर्भर है क्योंकि फसलों की आवश्यक पोषक तत्त्व इन जलवायु कारकों द्वारा संशोधित किया जाता है। इस क्षेत्र में वन, कृषि भूमि, बंजर भूमि, चारागाह भूमि, फसल एवं घास भूमि और शुद्ध बोया गया क्षेत्र सभी इसी कारक से जुड़े हुए हैं।

अपवाह तंत्र

अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत सर्वाधिक उँचाई नगरपालिका 710 मीटर से लेकर पूर्व की ओर हुटपा गांव (571 मीटर), जबकि दक्षिण में दोनोरेशमा गांव (596 मीटर) की ढाल है। इसमें यह प्रतीत होता है कि शहरी क्षेत्र की ऊंचाई अधिक है इसका ढलान पूर्व से दक्षिण–पूर्व की ओर है। वास्तव में इस प्रखंड के उत्तर में सिवाने नदी, मध्यवर्ती भाग में कोनार नदी तथा दक्षिण में बोकारो नदी और कटिया नाला है। यह सभी नदियां दामोदर जल संग्रह क्षेत्र का हिस्सा है। इन नदियों का प्रवाह जिन–जिन क्षेत्रों में है, वहाँ की नदी–घाटी क्षेत्रों में कृषि भूमि का वृहद विकास हुआ है।

प्राकृतिक वनस्पति

प्राकृतिक वनस्पति वे होते हैं जिनके विकास में मानव का हाथ नहीं होता है, वनस्पति का अर्थ किसी खास

स्थान एवं समय के परिप्रेक्ष्य में अनुकूल परिस्थितियों में पेड़–पौधे के विभिन्न जातियों के समुच्च के रूप में विद्यमान या अस्तित्व रखना होता है। वनस्पति भी भूमि उपयोग को प्रभावित करती है क्योंकि इनका विस्तार जहाँ होता है वहाँ कृषि भूमि में कमी होती है। जिन कृषि भूमि के चारों ओर वनस्पति का आवरण होता है वहाँ फसलों के उत्पादन में काफी कमी देखा गया है। ऐसी स्थिति में या तो वनस्पति का विस्तार हो जाता है या बंजर भूमि।

मिट्टी

मानव विकास के लिए भौतिक पर्यावरण एक अमूल्य उपहार है। इसी उपहार में मिट्टी शामिल है। यह मिट्टी स्वरूप संपूर्ण मानवीय गतिविधियों को प्रभावित करता है, क्योंकि मानव भी कृषि भूमि का विकास उन्हीं क्षेत्रों में करना पसंद करता है जहाँ की भूमि उपजाऊ एवं फसल के अनुरूप हो, विशेषकर नदी घाटी क्षेत्रों में कृषि का विकास अधिक हुआ है। साथ ही टॉड़ वाली अनुपजाऊ भूमि में भी सिंचाई के माध्यम से कृषि विकास हुआ है। परती भूमि में मानव आवासीय संरचना को विकास कर रहा है, उद्योग–धंधे एवं अन्य सभी प्रकार के क्रियाएं शामिल कर रहा है।

जल की उपलब्धता

जल की उपलब्धता के माध्यम से ही मानवीय सभ्यता को आधार प्राप्त हुआ है। मानव सभ्यता के विकास में जल की उपलब्धता का विशेष स्थान है। मानव की सभी क्रियाएं इन्हीं पर निर्भर है मानव के आवास निर्माण प्रक्रिया से लेकर उनकी भूमि के बंजर होने, परती छोड़ने, आवासीय संरचना का विकास, औद्योगिक संरचना इत्यादि में जल का विशेष स्थान है।

उपरोक्त सभी प्राकृतिक कारक अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग स्वरूप को प्रभावित कर रहा है।

मानवीय कारक

किसी भी क्षेत्र में भूमि प्रारूप वहां की मानवीय गतिविधियों के आधार पर निर्भर करती है। अध्ययन क्षेत्र हजारीबाग जिला के मध्य भाग में स्थित है। यहाँ पहुँच के सभी साधन मौजूद है, ऐसी स्थिति में यहां की भूमि उपयोग प्रारूप काफी प्रभावित है। जिस क्षेत्र में मानव की उच्च जीवन गुणवत्ता, उच्च शिक्षा पद्धति, उच्च स्तरीय सुविधाएं एवं महत्वपूर्ण आधारभूत सुविधा की प्राप्ति होती है। ऐसी स्थिति में वहां की भूमि उपयोग प्रारूप क्षेत्रों की तुलना में भिन्न होती है।

अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग प्रारूप के निम्न मानवीय कारक हैः

जनसंख्या वृद्धि/दबाव

जनसंख्या के दबाव का तात्पर्य एक निश्चित समय सीमा एवं क्षेत्र के अंतर्गत जनसंख्या में वृद्धि से है। यह उन क्षेत्रों की जनसंख्या की तुलना में अधिक हो सकती है। इस अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या निरंतर परिवर्तनशील है इसलिए यहाँ की भूमि उपयोग प्रारूप की को प्रभावित करता है।

हजारीबाग सी. डी. प्रखंड में जनसंख्या का वृद्धि दर 1991–2011

वर्ष	1991	2001	2011	वर्ष	दशकीय जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत में)		
कुल	202345	270664	290098		कुल	ग्रामीण	शहरी
ग्रामीण	098100	126644	118276	1991–2001	33.80	29.10	38.20
शहरी	104245	144020	177822	2001–2011	07.18	06.61	19.30

(स्रोत–जिला जनगणना पुस्तिका, 2011)

उपरोक्त तालिका में ध्यान करने से यह स्पष्ट होता है कि 1991–2011 के दशक के दौरान जनसंख्या निरंतर वृद्धि होती गई। 1991 में यह बिहार का हिस्सा हुआ करता था तो उस दौरान इसकी जनसंख्या 20,2345 थी, जो 2001 की जनसंख्या में 270664 एवं 2011 मे 290098 हो गई। इससे यह प्रतीत होता है कि निरंतर जनसंख्या में वृद्धि देखा गया। यह वृद्धि के ग्रामीण में ही नहीं बल्कि शहरों में भी रहा। 1991–2001 के दशक दशकीय वृद्धि 29.1 प्रतिशत (ग्रामीण) एवं 19.30 प्रतिशत (शहरी) देखने को मिलता है। इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में

अधिक परिवर्तन शहरी क्षेत्रों से देखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि शहरों कि ओर प्रवास कर रहा है, ऐसी स्थिति में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र भूमि संभावित हो रहा है, इसके कारण जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में जंगल हो रहा है वही शहरों में आवासीय विकास, चिकित्सीय शिक्षा और विकास देखने को मिल रहा है।

प्रवास

प्रवास से तात्पर्य निश्चित क्षेत्र में निश्चित समय सीमा के अंतर्गत जनसंख्या का विशेष कारण से एक स्थान से दूसरे स्थान आना–जाना करना ही प्रवास है।

प्रवास से जनसंख्या में स्थान परिवर्तन होता है। अध्ययन क्षेत्र में यह प्रवास की प्रक्रिया सभी 25 पंचायत में दिखाई देता है। वास्तव में यह क्षेत्र कृषि प्रधान है। जब मानसून में कमी होती है या कृषि चक्र समाप्त हो जाता है तो जनसंख्या का प्रवास शहरों अर्थात् हजारीबाग नगर पालिका की ओर काफी मात्रा में देखने को मिलता है। इससे गांव एवं शहर दोनों की भूमि उपयोग में प्रभाव देखने को मिल रहा है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रवास का प्रतिशत (2001–2011)

प्रवास का प्रकार	कुल	पुरुष	महिला
सकल प्रवास	–01.80	–4.52	1.11
उत्प्रवास	47.80	24.94	72.27
आ प्रवास	46.00	20.42	73.39

(स्रोतः जिला जनसांख्यिकीय विभाग)

शहरीकरण

शहरीकरण या नगरीकरण भूमि उपयोग प्रारूप में परिवर्तन का एक आधारभूत इकाई माना जाता है। वास्तव में शहरी क्षेत्रों का भौतिक विस्तार को शहरीकरण कहा जाता है। इसमें एक समाज समुदाय के आकार और शक्ति में वृद्धि होती है। यह शहरीकरण ग्रामीण जनसंख्या को रोजगार, आवास, शिक्षा, व्यवसाय, स्वास्थ्य के कारण आकर्षित करते है। अध्ययन क्षेत्र में शहरीकरण का विकास इन सभी कारकों के माध्यम से होता है।

अध्ययन क्षेत्र में शहरी जनसंख्या वृद्धि दर 1911–2011 के दशक के दौरान देखा गया है जो निम्न तालिका से प्रदर्शित होता हैः

शहरी जनसंख्या वृद्धि दर 1991–2011

वर्ष	शहरी जनसंख्या (प्रतिशत में)	अंतर (प्रतिशत में)
1991	51.50	–
2001	53.20	1.70
2011	59.23	6.03

(स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका,1991–2011)

शहरी फैलाव

शहरी फैलाव का संबंध शहरों की भूमि एवं भौतिक विस्तार से है। जब शहरों में जनसंख्या का दबाव से अधिक हो जाता है, तो जनसंख्या का विस्तार एवं उपांत पेटी में रहने लगती है। इससे शहरी क्षेत्रों के साथ–साथ उपांत पेटी के भूमि उपयोग प्रारूप में परिवर्तन होकर आवासीय संरचना का विकास हो जाता है। इससे औद्योगिक विकास, परिवहन विकास भी होने लगता है।

अध्ययन क्षेत्र में झारखंड सरकार आवास विभाग ने 32 वार्ड का सर्वेक्षण 2015–16 में किया था, परंतु 2018 का नवीन सर्वेक्षण के आधार पर 36 वार्ड निर्धारित किया गया। इन शहरी भूमि के निरंतर विकास को देखते हुए झारखंड सरकार आवास विभाग ने मास्टर प्लान 2040 के अंतर्गत 55 वार्ड एवं 26 गांव को शामिल किया है।

शिक्षा

शिक्षा या उच्च शिक्षा का स्तर की आवश्यकता ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के भूमि उपयोग प्रारूप को प्रभावित कर रहा है। जब किसी ग्रामीण पंचायत या शहरी भूमि क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर में बढ़ोतरी होगी तो वहां के खाली पड़ी भूमि पर आवासीय संरचना का विकास होगा। साथ ही इनके आसपास वाणिज्य गतिविधियों का विकास होता है एवं रिहायशी क्षेत्र और फुटपाथ वेडंर का भी विकास होगा।

अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2001 में लगभग 65 (65 प्रतिशत) गाँव में शिक्षा की सुविधा थी, जो कि वर्तमान 2011 में बढ़कर 71 (88.75 प्रतिशत) हो गई। अतः शिक्षा के स्तर में विकास से वहाँ की भूमि उपयोग संरचना प्रभावित हुई क्योंकि इसके न केवल विद्यालय, कॉलेज या विश्वविद्यालय का विकास होता है, बल्कि उसके चतुर्दिक आवासीय स्वरूप, मार्केट, परिवहन सुविधा का विकास होता है। हजारीबाग नगर निगम क्षेत्र में विनोबा भावे विश्वविद्यालय के स्थापना से 1992–2022 के दौरान पूरे क्षेत्र के भूमि उपयोग प्रारूप में बदलाव देखा गया है।

स्वास्थ्य सुविधा

भूमि उपयोग प्रारूप में परिवर्तन का आधारभूत तत्व के रूप में स्वास्थ्य सुविधा है। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र से शहरों की जनसंख्या का दैनिक, मासिक, मौसमी, स्थाई प्रवास की अधिकांश मात्रा स्वास्थ्य सुविधा को लेकर होती है, जिससे शहरी क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन होता है। जैसेः हजारीबाग मेडिकल कॉलेज, आरोग्य अस्पताल के विकास के संपूर्ण क्षेत्रों के भूमि स्वरूप में परिवर्तन देखा गया। इस अध्ययन क्षेत्र में 100 से अधिक नर्सिग होम है।

आवासीय स्वरूप

मानव की आधारभूत तीन तत्वों में एक आवास भी है। यह भूमि उपयोग प्रारूप में परिवर्तन का आधार है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि मानव सामाजिक प्राणी है और यह समाज में रहना पसंद करता है जिससे एक आवासीय संरचना का विकास होता है, जो धीरे–धीरे आसपास के क्षेत्रों में आधारभूत संरचना के विकास में मदद करती है।

अध्ययन क्षेत्र की अधिकांशतः ग्रामीण जनसंख्या आय के उद्देश्य से शहरो की ओर आकर रहती है, जिससे ग्रामीण एवं शहरी दोनों के आवासीय संरचना में बदलाव देखने को मिलता है। विशेषकर उपांत पेटियों में दृष्टिगत होती है। जैसेः चानो, बहेरी, लाखे, सिंघानी, अमृतकला, सितागढ़ा, मेरू इत्यादी। जबकि शहरो में आवासीय संरचना के अनेक खंड विकसित हो चुके है जिसमे नवाडीह, सिंदुर, सारले, विकास नगर, प्रेम नगर, कोर्रा, नूतन नगर, देवांगना, आन्नदपुरी, धोबी तलाब, जयप्रभा नगर, यशवंत नगर, डेमोटाँड़, मासीपिढ़ी, बभनवै, खिरगाँव, इन्द्रपुरी, कल्लु चौक और झीलनगर इत्यादी।

परिवहन विकास

परिवहन विकास भूमि उपयोग परिवर्तन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है यह अध्ययन क्षेत्र में भी काफी मात्रा में दिखाई देता है। अध्ययन क्षेत्र में एनएच–100 एवं एनएच–33 मुख्य परिवहन मार्ग है साथ ही इस क्षेत्र में बड़काकाना–कोडरमा रेलवे ट्रेक का विकास हुआ है। यहाँ अधिकांश परिवहन मार्गो के सहारे ही परिवर्तन दृष्टिगत होती है। एनएच–33 के सहारे कनहरी पर्वतीय क्षेत्र से होते हुए रांची बाईपास में निकाला गया है जिससे पूरे क्षेत्र का प्रारूप परिवर्तन है।

निष्कर्ष

उपरोक्त संपूर्ण विवरण से यह स्पष्ट होता है कि हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के भूमि उपयोग प्रारूप में निरंतर परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इन परिवर्तनों का मूल कारण यहां की भौतिक एवं मानवीय कारक है। भौतिक कारक में सबसे अधिक महत्वपूर्ण उच्चावच, जलवायु, मिट्टी एवं जल की उपलब्धता है, जबकि मानवीय कारक में जनसंख्या दबाव, प्रवास एवं शहरीकरण का विशेष योगदान है। इन कारकों के आधार पर वर्ष 2000–01 से 2011–12 के दौरान परिवर्तन देखा गया। 10 वर्षों के दौरान वन भूमि का विस्तार सबसे अधिक देखा गया जो

कि 31.74 प्रतिशत (2000–2001) से 39.92 प्रतिशत (2011–12) यानि की 8.18 प्रतिशत वृद्धि देखने को मिला। इन्हीं दशकों में अकृषित बंजर भूमि में गिरावट दर्ज हुई जो 13.74 प्रतिशत (2000–2001) से घटकर 2.02 प्रतिशत (2011–12) रह गई है, इनका मूल मानवीय कारक है क्योंकि मानव की आवश्यकता बढ़ रही है। यह खाली बंजर भूमि में आवास, परिवहन, सुरक्षा, स्वास्थ्य, कृषि जैसे कार्यों को बढ़ावा दे रही है।

अतः यह कह सकते हैं कि अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग प्रारूप यहाँ की भौतिक एवं मानवीय कार्य को के ऊपर निर्भर करती है।

संदर्भ सूची

1. रामानुज, अरुण कुमार (2019): *''झारखंड में कृषि के बदलते स्वरूप''* राजेश पब्लिकेशन, दरियागंज न्यू दिल्ली, 110002।
2. सिन्हा, श्याम नंदन (2020): *''चौजिग पैटर्न ऑफ लैंड यूज इन झारखंड''* दरियागंज, न्यू दिल्ली राजेश पब्लिकेशन, 110002।
3. दांगी, संतोष (2017): *''एग्रीकल्चर डेवलपमेंट''* दरियागंज, न्यू दिल्ली, राजेश पब्लिकेशन, 110002
4. भट्ट, एस. सी. (2016): *''दि डिस्ट्रिक्ट् गैजेटियर ऑफ झारखंड''* दरियागंज, न्यू दिल्ली, ज्ञान प्रकाशन हाउस, 110002।
5. जिला जनगणना पुस्तिका– 2001–2011।
6. झारखंड सरकार, आवास विभाग।
7. Mahboubi, Mohammad, Farajollali & Asgani (2017): Socio– economic Factors Influencing land use changes in Maraven Tappeh Region, *Iran Ecopersia*, 5 (1) 1683-96.
8. District statistical hand book.2021.
9. www.desjharkhand.nic.in.
10. www.hazaribag.com.
11. udh.kzharkhand.gov.in.

––==00==––